अध्याय 48

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**बाँटना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **सभोपदेशक 5-8**

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पढ़ें**) संक्षेप में ***बताएं*** कि आपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (सभोपदेश 5,6,7,और 8)से क्या सीखा।

अपने अनुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) **[शिष्यता]** **शिष्यता से सम्बन्धित पदों का पुनरावलोकन**

क. याद की गयी आयतों का पुनरावलोकन करने का तरीका

पहले से याद की गयी बाइबल की आयतों का पुनरावलोकन करने के निम्नलिखित भाग हैं:

1. पुनरावलोकन करना

पुनरावलोकन करने का अर्थ है कि जिन आयतों को रोज़ आपन याद किया था उनमें से 5 को फिर से दोहराएं। आयतों को बार बार दोहराना उसे याद करने व उसको सही उच्चारण करने का सबसे बेहतर तरीका है। इसलिए आप उन 5 आयतों को आने वाले 5 सप्ताहों में दिन में कम से कम एक बार जरूर दोहराऐं जिन्हे आपने सबसे अन्त में याद किया था। इस तरीके से आप बाइबल की हर एक नयी आयत को 'पुनः दोहराव ' प्रणाली में आने से पहले 35 बार दोहरा चुके होते हैं।

2 पुनः दोहराव प्रणाली।

पुनः दोहराव प्रणाली का अर्थ है कि आप पहले याद की गयी सारी आयतों को तीन सप्ताह में एक बार जरूर दोहराते हैं। पुनः दोहराव प्रणाली आपके द्वारा याद की गयी आयतों को याद रखने का सबसे बेहतर तरीका है। अतः 100 पहले याद की गयी आयतो में से, 5 आयतों को प्रत्येक दिन दोहराएं। अतः आप पहले से याद की गयी आयतों को 3 सप्ताह में एक बार पुनः दोहराते हैं।

3. साथ ले कर चलें।

कण्ठस्थ वचनों के कार्ड होल्डर या आयतों को लिखने वाली कॉपी को साथ में रखें। यात्रा के समय, या दिन में खाली समय को आयतें दोहराने, मनन करने तथा प्रार्थना करने के लिए इस्तेमाल करें। पहले याद की गयी 5 आयतों को फिर से दोहराएं। जिन आयतों को आपने पहले दोहराया था उन्हें फिर से दोहराएं। आयतों में लिखी बातों पर मनन करें तथा उसके अनुसार प्रार्थना करें।

4. मूल्यांकन करें।

एक दूसरे से यह जानने के लिए पूछें कि क्या अभी भी आप याद की गयी आयत को ठीक तरह से जानते हैं।

सामुहिक सभाओं के दौरान लोगों को दो-दो के समूह में बांट दें और आपस में एक दूसरे द्वारा सबसे आखिर में याद की गयी आयतों को जांचें। इसके अलावा कभी कभी,दो दो के समूह में बंटकर पहले याद की गयी 5 बाइबल की आयतों की श्रृंखला की भी जांच करें। एक दूसरे के साथ मिलकर जांचे कि क्या आपको उस आयत का शीर्षक, हवाला या बिना किसी गलती के वह पूरी आयत याद ह। सकेंतक के रूप में, कभी आप शीर्षक, कभी हवाले या कभी बाइबल की आयत के पहले कुछ शब्द बता सकते हैं।

ख. "सुसमाचार" की श्रृंखला को दो दो लोग मिलकर दोहराएं

1. प्रभुता। रोमियों 12:1-2	4. देना। 2 कुरिन्थियों 9:6-7
2. इनकार। लूका 9:23	5: शिष्यों का निर्माण करना: मत्ती 28:18-20
3. सेवा : मरकुस 10:45	

4 **बाइबल अध्ययन** (70मिनट) ***[संसार में जीवन बिताना]***

संसार में अगुवाई को भावी हाथों में सौंपना : प्रेरितों 20:17-38

बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों का इस्तेमाल करते हुए प्रेरितों के काम 20:17-38 तक का एक साथ मिलकर अध्ययन करें।

कदम 1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये हम मिलकर प्रेरितों के काम 20:17-38 को एक साथ पढ़ें।

आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें निरीक्षण

ध्यान दें। **इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**

या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?

लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हों। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बांटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस में बांटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बांटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।

(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बांट सकते हैं, यह जरूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँटे गयें विचार एक ही समान हों।

खोज 1.हमेशा अपनी अगुवाई को आगे बढ़ाने या सौंपने का समय आता है।

हमेशा ऐसा समय आता है जब नये मसीही अगुवों को चुना जाए और ऐसे अगुवों के स्थान पर नियुक्त किया जाए जिन्हें और किसी कार्य के लिए कहीं और भेजा जा रहा हो। प्रेरित पौलुस ने इफिसुस में जाकर एक मण्डली को पाया (प्रेरितों 19) और दो वर्षो में ही एक कलीसिया की स्थापना कर दी(प्रेरितों 19:10)। पौलुस को लेकिन ऐसा महसूस हुआ कि वह यहूदियों सताव के कारण जल्द ही मर जायेगा (प्रेरितों 20:3,19, 22-23; 21:10-13)और हो सकता है कि यह उसका इफिसुस में आखिरी दौरा हो (प्रेरितों 20:25,38)।प्रेरितों 20 अध्याय नये अगुवों के सन्दर्भ में बहुत से महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को बताता है। जब आप नये मसीही अगुवों की खोज करें तो उनमें, प्रेरितों 20 में पायी जाने वाली विशेषताओं को जरूर ढूँढ़ें।

खोज 2. पुराने अगुवों को नये अगुवों के लिए एक आदर्श सामने रखना चाहिए।

नये अगुवों को ऐसे ही चुनकर नियुक्त नहीं कर देना चाहिए। उन्हें प्रार्थना के साथ चुना जाना चाहिए, और ज़रूरत हो तो उन्हें प्रशिक्षित करके तब उन्हें नियुक्त करना चाहिए। यीशु मसीह ने अपने चेलों का चुनाव करने, प्रशिक्षित करने और उन अगुवों को नियुक्त करने के लिए जो इस धरती पर उसकी सेवाकाई को आगे बढ़ाने वाले थे,दो से साढ़ें तीन वर्ष का समय लिया। परन्तु सबसे बढ़ी सच्चाई यह है कि पुराने अगुवों को नये अगुवों के सामने आदर्श रखने, उनके ईश्वरीय चरित्र और उनकी निपुण अगुवाई के द्वाराउन्हें शिक्षा प्रदान करना,चाहिए (उदाहरण के लिए, अगुवे के रूप में दाऊद, भजन 78:72)।

कदम 3 प्रश्न व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?

आईये हम प्रेरितों के काम 20:17-38 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं और फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछें।

लेखा ले: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बाँटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये हैं)

20: 17

प्रश्न 1. मण्डली के पुरनिये की योग्यता क्या होनी चाहिए?

ध्यान दें। प्रेरितों ने पत्रियों में स्पष्ट रूप से मण्डली में पुरनियों की योग्यताओं के बारे में लिखा हुआ है। पुरनियों का चुनाव कभी भी उनके रूतबे, शक्ति या समाज में उनकी सम्पत्ति के आधार पर नहीं होना चाहिए। उसका चुनाव सदैव उसके व्यक्तिगत जीवन, उसके परिवार और यीश् मसीह के प्रति उसकी सेवकाई को ध्यान में रखकर होना चाहिए।

उसके व्यक्तिगत जीवन व उसके आचरण से जुड़ी आवश्यक योग्यताएं।

उनमें से कुछ आवश्यक योग्यताएं निम्नलिखित हैं: वह सुनाम व्यक्ति होना चाहिए,शान्त, संयमी, आदरणीय, पहुनाई करने वाला होना चाहिए, पियक्कड़ या मारपीट करने वाला न हो; वरन कोमल हो और झगड़ालू और न लोभी हो, असन्तुष्ट न हो, बाहर वालों में उसका सुनाम हो(1तीमुथीयुस 3:1-7)। वे निर्दोष और एक ही पत्नी के पति हों,जिन के लड़के वाले विश्वासी हों, जिन में लुचपन और निरंकुशता का दोष नहीं हो, न हठी, न क्रोधी, न पियक्कड़, न मारपीट करने वाला, और न नीच कमाई का लोभी लेकिन पहुनाई करनेवाला, भलाई का चाहनेवाला,संयमी, न्यायी,पवित्र और जितेन्द्रिय हो(तीतुस 1:5-9)। उसक अपने व्यवहार और विश्वास में दूसरों के लिए उदाहरण होना चाहिए(इब्रानियों 13:7)। वह लोगों की अगुवाई करने का इच्छुक होना चाहिए उन पर प्रभुता करने वाला नहीं, नम्र व्यक्ति और अपनी भेड़ों के लिए एक उदाहरण होना चाहिए। छोटे शब्दों में, उसकी इच्छाओं और स्वभाव के साथ साथ उसमें संयम भी पाया जाना चाहिए। पैसों के क्षेत्र में अगर बात करें तो वह भरोसेमन्द और पैसों का लालची नहीं होना चाहिए। रिश्तों के सम्बन्ध में बात करें तो वह नम्र और दूसरों पर प्रभुता करने वाला नहीं होना चाहिए। उसके प्रभाव की बात करें तो,उसे दूसरों के सामने एक आदर्श रखना चाहिए(1 पतरस 5:1-5)।

उसके परिवार से सम्बन्धित आवश्यकताएं ।

आवश्यता यह नहीं है कि उसका शादीशुदा होना जरूरी है, परन्तु वह मनचला या इश्कबाज़ नहीं होना चाहिए। यदि वह विवाहित है, तो उसे अपनी पत्नी के साथ विश्वासयोग्य बने रहने में एक आदर्श बनना चाहिए। यदि वह अविवाहित है तो उसे स्त्रियों के पति पवित्र रहने में एक आदर्श होना चाहिए। यदि उसके बच्चे हैं तो, उसे उन्हें यीशु मसीह में विश्वास और मसीह की आज्ञापालन करने तथा अपने माता पिता का आदर करना सिखाना चाहिए।

उसकी आत्मिक योग्यताओं के विषय में आवश्यकताएं।

अगर परिपक्वता की बात करें तो वह कोई नया विश्वासी या अपरिपक्व विश्वासी नहीं होना चाहिए। बाइबल की बात करें तो,वह अटल मसीही सिद्धान्तों पर विश्वास करने वाला और अपनी सेवकाई के अलग अलग क्षेत्रों में बाइबल का इस्तेमाल करने वाला होना चाहिए।

20:18-19

प्रश्न 2.पौलुस की व्यक्तिगत अगुवाई की विशेषताएं क्या हैं?

ध्यान दें।

मसीही अगुवों में खोये हुए लोगों के लिए मन में बोझ होता और अलग अलग स्थानों में उन तक पहुंचने का दर्शन होता है। पौलुस महज एक मसीही अगुवा या किसी मण्डली का पासबान नहीं वरन वह यीशु मसोह का प्रेरित था। यीशु मसीह ने अपने ग्यारह प्रेरितों और प्रेरित पौलुस का इस्तेमाल करके इस धरती पर अपनी कलीसिया की स्थापना की। सबसे पहले पतरस ने यहूदियों के बीच (प्रेरितों 2) सामरियों के बीच में(प्रेरितों 8)अन्यजातियों के बीच में(प्रेरितों 10) कलीसिया को स्थापना की। मत्ती 16:18 में आप यीशु द्वारा पतरस से कहे गये शब्दों पर गौर करें। परन्तु प्रेरित पौलुस ने पूर्वी और पश्चिमि रोमी सम्राज्य में चारों तरफ मण्डलियों को फैला दिया और एशिया माइनर (टर्की) और सीरिया(प्रेरितों 9:30; गलातियों 1:21-23; प्रेरितों 13-14),साइप्रस (प्रेरितों 13),मकिदूनिया(प्रेरितों16), ग्रीस (प्रेरितों17-19),इकिनियुम(अलबानिया)(रोमियों 15:19), क्रेत(तितुस 1), इटली(रामियों 15:23; प्रेरितों 19:21)और सम्भवत: स्पेन में (रोमियों 15:24,28)प्रथम मण्डलियों की स्थापना की।

मसीही अगुवे जीवन व्यतीत करने और सेवा करने के क्षेत्र में एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

मसीही अगुवा का आचरण व उसका स्वभाव उसके उपदेशों व शिक्षाओं से ज्यादा प्रभावशाली ढंग से बोलता है। यीशु ने उसे बताया कि उसे अन्धकार में एक ज्योति होना चाहिए; उसे स्वादहीन समाज में नमक और अनुसरण करने वाले लोगों के लिए एक आदर्श होना चाहिए(मत्ती 5:14-16; मत्ती 20:25:28)।

20:20-27

प्रश्न 3. प्रेरित पौलुस के अपने निजी अगुवाई के लक्ष्य क्या हैं?

ध्यान दें।

(1) मसीही अगुवा बाइबल में प्रगट की गयी परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा को प्रचार करता है(प्रेरितों 20:27)।

मसीही अगुवे के लिए कम से कम परमेश्वर की इच्छा को जानना जरूरी है। विश्वासी को केवल सुसमाचार या बाइबल के कुछ भाग को नहीं चुनना चाहिए,परन्तु उसे बाइबल में पायी जाने वाले सम्पूर्ण इच्छा को जानना जरूरी है। बाइबल के संदेश में एकता है।

- मसीही अगुवों को नये विश्वासियों को पुराने नियम से निम्नलिखित विषयों पर शिक्षा प्रदान करना चाहिए: बाइबल की प्रवृति, सृष्टि, मनुष्य का पाप में फँस जाना, विश्वासियों के लिए परमेश्वर का उद्धार, बाइबल के अनुसार मसीह के पूर्वज, परमेश्वर की वाचा, मनुष्य का विश्वास, क्षमा, व्यवस्था और अनुग्रह, बाइबल की ऐतिहासिक पुस्तकें, धर्मतन्त्र में परमेश्वर का राज्य, बाइबल में पायी जाने वाली कविताएं, बाइबल में इस्राएल,दानिय्येल की पुस्तक के अनुसार संसार में पाये जाने वाले राज्य।
- मसीही अगुवों को नये विश्वासियों को नये नियम से निम्नलिखित विषयों पर शिक्षा देनी चाहिए: मसीह का जीवन,मसीह की मृत्यु,मसीह का पुनरूत्थान, मसीह की प्रभुता, परमेश्वर का राज्य, मसीही समाज या कलीसिया(विश्वव्यापी और व्यक्तिगत/स्थानीय), मसीही बढ़ौतरी, शिष्यों का निर्माण,मज़दूरों को प्रशिक्षण देना, अगुवों को तैयार करना,मसीही पुरूषों व स्त्रियों का सम्बन्ध, आत्मिक युद्ध, पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व व उसके कार्य,मण्डली के कामों में अपने वरदानों का इस्तेमाल करना और यीशु मसीह का दूसरा आगमन।
- मसीही अगुवों को नये विश्वासियों को जानना और विश्वास करना ही नहीं परन्तु करना भी सिखाना चाहिए। उन्हें नये विश्वासियों को परमेश्वर के वचनों को अपने व्यवहारिक जीवन में इस्तेमाल करना सिखाना और मसीही चरित्र की शिक्षा प्रदान करना चाहिए।

(2) मसीही अगुवाई किसी भी सहायत सिद्धान्त या बात का प्रचार करता है। (प्रेरितों 20:20)

एक मसीही के लिए उतना ही सुनना काफी है जिससे उसकी कुछ सहायता हो सके। विश्वासियों को मनुष्यों के द्वारा रची गयी कहानियों, राजनैतिक विचारधाराओं और कार्यक्रमों, दूसरे लोगों के विरूद्ध बोयी जाने वाली बुराई, झूठे भविष्यद्वक्ता की झूठी

शिक्षाओं या आत्मिक मामलों में किसी व्यक्ति के अपने ही व्यक्तिगत विचार सुनने की आवश्यकता नहीं है। मसीही अगुवों को अच्छी तरह से अपने आपको तैयार करना चाहिए, बाइबल का विस्तृत विवरण करना चाहिए , और लोगों को उन सारी बातों को सिखाना चाहिए जिससे उनकी उन्नति सम्भव हो (इफिसियों 4:29)।

(3) मसीही अगुवे लोगों को सार्वजनिक तौर पर व घर घर जाकर शिक्षा देते हैं(प्रेरितों 20:20)।

एक पुरनिया बाइबल की शिक्षा देने में निपुण होना चाहिए(1 तीमुथीयुस 3:2)। कुछ मसीही अगुवे मण्डली या कलीसिया में सार्वजनिक तौर पर बाइबल से उपदेश देते हैं(1तीमुथीयुस 5:17), जबकि दूसरे लोग विश्वासियों के घर में जाकर छोटे-2 समूहों में शिक्षा देते हैं (प्रेरितों 5:42; 17:1-4)।

(4) एक मसीही अगुवा बिना कोई भेद के सभी लोगों को बताता है कि वे मन फिरा कर विश्वास करना चाहिए (प्रेरितों 20:21)।

मसीही अगुवे केवल वाह वाह कहने वाले लोगों को केवल भाषण नहीं देते, वरन वे संदेश के प्रति प्रतिक्रिया देने के लिए लोगों को उत्साहित करते हैं। वे गैर विश्वासियों को एकमात्र परमेश्वर की ओर मन फिराकर अपने पूर्ण मन से पश्चाताप करने के लिए आमन्त्रित करते हैं। इसका मतलब है कि गैर मसीही लोग स्वीकार करते हैं कि वे पापी, भटके हुए हैं और उन्हें एक उद्धारकर्ता की जरूरत है। वे लोगों को यीशु मसीह पर विश्वास करने के लिए आमन्त्रित करते हैं, जिसने उनके बदले अपनी जान दी, और मुर्दो में से जीवित हो गया ताकि वे नया जीवन प्राप्त कर सकें।

(5) मसीही अगुवा कैद व कष्टों को सहने के लिए तैयार रहता है (प्रेरितों 20:22-23)।

मसीही अगुवों के लिए यह अपने आप में एक कठिन बुलाहट है। लेकिन मसीह व उसके राज्य की खातिर दु:ख उठाने का एक बढ़ा प्रतिफल है। प्रभु यीशु मसीह, जो एक धर्मी न्यायी है, वह उन्हें धार्मिकता के मुकुट से सुशोभित करेगा(2 तीमुथीयुस 4:8)और वे प्रभु यीशु मसीह की महिमा में भागीदार होगें। यहां पर यीशु मसीह की महिमा का अर्थ नया स्वर्ग और नया आकाश है जहां पर केवल धार्मिकता और धर्मी लोग वास करेंगे। पुराना फिरदौस वो सुन्दर बगीचा था, जहां पर लोग पाप कर सकते थे और असल में उन्होने वैसा किया भी(उत्पत्ति 2:15-17; 3:6)! लेकिन नयी धरती उस पुराने फिरदौस के कहीं अधिक सुन्दर है। वह सुन्दरता पूरी धरती को ढांप लेगी(प्रकाशितवाक्य 21:1-2), केवल यीशु में विश्वास करने वाले लोग ही उसमें वास करेंगे(प्रकाशितवाक्य 21:8,27)और उसके बाद कभी मनुष्य पाप करके दुबारा नहीं मरेगा(प्रकाशितवाक्य 21:4-5;यूहन्ना 11:25-26)।

(6) एक सच्चा मसीही हमेशा अपना काम पूरा करने वाला होता है(प्रेरितों 20:24)

सच्चे मसीही अगुवे कभी हार नहीं मानते। वे तब तक धीरज को पकड़े रहते हैं जब तककि परमेश्वर द्वारा उन्हें सौंपा गया काम पूरा नहीं हो जाता(यूहन्ना 17:4; यूहन्ना 19:30; कुलुस्सियों 4:17)।

20:28-31

प्रश्न 4. मण्डली में पुरनियों को कौन नियुक्त करता है और उनका क्या काम होता है?

ध्यान दें।

(1) पवित्र आत्मा कुछ लोगों को मण्डली के ऊपर पुरनिये के रूप में ठहराता है।

वह इस कार्य को निम्नलिखित तरीकों से करता है:

- वह उम्मीदवार नया-जन्म पाया हुआ व्यक्ति होना चाहिए। नया जन्म हमेशा पवित्र आत्मा का कार्य होता है। (यूहन्ना 3:3-8)
- उम्मीदवार नया विश्वासी न हो, वरन मसीह का चेला हो, अर्थात वह एक परिपक्व विश्वासी होना चाहिए। (1तीमुथीयुस 3:6)
- ऐसा व्यक्ति जो मण्डली में सक्रिय हो और यह प्रमाणित हो कि परमेश्वर उनके और उनकी सेवाकाई के साथ है, अर्थात परमेश्वर का आत्मा उनके द्वारा कार्य करता है, वह व्यक्ति चुनाव करने के लिए बेहतर विकल्प होगा(2कुरिन्थियों 10:18; प्रेरितों 6:3)

- पुरनियों को चुनाव करने वाली मण्डली के लोग भी, नया जन्म पाये हुए विश्वासी होना चाहिए(प्रेरितों 1:21-22; 6:3)।
- गैर मसीहियों का पुरनियों के चुनाव या नियुक्ति में शामिल होना निषेध है।

(2) पुरनिये के कर्तव्य निम्नलिखित हैं:

- एक मण्डली की अगुवाई करने के लिए पुरनियों के एक परिषद का होना जरूरी है(2 तीमुथीयुस 4:14), जिस में एक नहीं परन्तु बहुत से पुरनिए (पास्टर या याजक) शामिल होते हैं।
- पुरनिया विश्वासी का चरवाहा और विश्वासियों से जुड़ी सभी प्रकार की सवकाई का संरक्षक होना चाहिए। एक चरवाह अपनी भेड़ों को खिलाता,अगुवाई करता तथा उनकी सुरक्षा करता है। एक संरक्षक अपनी मण्डली के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करता तथा अपनी भेड़ों के बीच होने वाली प्रत्येक गतिविधी पर नज़र रखता है।
- पुरनियों को अपने ऊपर भी नजर रखने की आवश्यकता होती है। पुरनिये केवल अपनी भेड़ों के ही आत्मिक व नैतिक जीवन के लिए जिम्मेदार नहीं होते,वरन वे पुरनियों के भी आत्मिक और नैतिक जीवन के लिए ज़िम्मेदार होते हैं। इसलिए किसी भी मण्डली में एक से ज़्यादा पुरनियों का होना बहुत ज़रूरी है! हर एक पुरनिये(हर एक मसीही अगुवा)को अपने जीवन व सेवकाई के सन्दर्भ में अपनी पत्नी और पुरनियों के परिषद के प्रति ज़िम्मेदार व उत्तरदायी होना चाहिए(प्रेरितों 20:28)।
- पुरनिये को अपनी भेड़ों(कलीसिया) की झूठे शिक्षकों से रखवाली करनी चाहिए जो उन्हें परेशान करने की कोशिश कर सकते हैं।
- पुरनियों को पौलुस के आदर्श का अनुपालन करते हुए यदि कहीं पर किसी को चेतावनी देने की ज़रूरत हो तो ज़रूर देना चाहिए।

20:32-35

प्रश्न 5. मसीही अगुवों की किस प्रकार सहायता की जानी चाहिए?

ध्यान दें।

मण्डली विश्वास करती है कि परमेश्वर अपने लोगों की देखभाल करता है(प्रेरितों 20:32)।

पौलुस ने जिन लोगों की देखभाल की थी वह अब उनको छोड़कर जा रहा है, परन्तु इसका मतलब यह नहीं है कि उस ने उन्हें त्याग दिया है। उसने उन्हें परमेश्वर के हाथों में सौप दिया और परमेश्वर का वह अनुग्रह जो कमाया नहीं जा सकता, वह निश्चय ही उनकी उसी तरह देखभाल करेगा जिस प्रकार से यीशु मसीह ने अपने साथ रहने वाले चेलों की देखभाल की थी। उसने उन्हें बाइबल में पाये जाने वाले परमेश्वर के वचन के हाथों सौंप दिया, जिस से उनकी उन्नति होगी व विश्वासियों के बीच में जगह भी मिलेगी।

इफिसुस की मण्डली के लिए अब दूसरों पर निर्भर होने की बजाय अपने पैरों पर खड़े होने का समय था। उनके साथ एक ऐसा परमेश्वर था जो उन्हें कभी नहीं छोड़ने वाला था(इब्रानियों 13:5-6; मत्ती 28:20)! उनके पास परमेश्वर का वचन अर्थात बाइबल थी, जिसके द्वारा वे निरन्तर आत्मा में बढ़ते रहेगें। और उनके पास पुरनियों का परिषद था जो उनकी अगुवाई और सरंक्षण कर सकता था।

अगुवों के भरण पोषण करने का अधिकार।

यद्यपि पौलुस ने यदा कदा ही मण्डलियों से आर्थिक मदद प्राप्त की(1 कुरिन्थियों 9:6),लेकिन उसने शिक्षा दी कि पुरनिये, जो पूरी तरह से कलीसिया की सेवाकाई में शामिल हैं, वे "दुगने आदर" और वेतन या आर्थिक भुगतान के हकदार हैं। यह खास तौर पर उन लोगों के लिए लागू होता है जो बाइबल का प्रचार करते और शिक्षा देते हैं। मजदूर को उसकी मजदूरी मिलना जरूरी है(1तीमुथीयुस 5:17-18)। यीशु मसीह ने आज्ञा दी है कि जो लोग सुसमाचार सुनाने का कार्य करते हैं उनकी पूर्ति सुसमाचार से ही होनी चाहिए(1 कुरिन्थियों 9:7-14)। निश्चय ही मसीही अगुवे को आर्थिक सहायता प्राप्त करने का अधिकार है, लेकिन उसे मण्डली से आर्थिक सहायता की मांग करने का अधिकार नहीं हैं।

अगुवे को बिना किसी आर्थिक मदद के सेवा करने का अधिकार है(प्रेरितों 20:33-34)।

प्रेरित पौलुस ने मण्डलियों की बिना किसी आर्थिक सहायता मांगे या कोई वेतन लिए सेवा की थी। वास्तव में पालुस को अपनी व्यक्तिगत ज़रूरतों व अपने सहकर्मियों की जरूरतों को पूरी करने के लिए अपनी मेहनत की कमाई से पूर्ति करने में संतोष मिलता था। पौलुस द्वारा ऐसा करने का निर्णय लेने का कारण यह भी हो सकता है, कि उस समय में बहुत से झूठे प्रेरित सक्रिय थे जो पैसां के लिए मण्डली में सेवा किया करते थे। वह मसीहियों के लिए एक आदर्श रखते हुए प्रगट करना चाहता था कि जो कुछ उसे प्राप्त हुआ है, वह यीशु मसीह की ओर से सेंत मेंत में प्राप्त हुआ है (1कुरिन्थियों 4:7), और जो कुछ वह दूसरों को देता है वह भी सेंत मेत देता है(मत्ती 10:8)। वह निश्चय ही किसी मसीही मण्डली पर भार नहीं डालना चाहता था(2 कुरिन्थियों 11:9)।

अगुवों की ज़िम्मेदारी है कि वे ज़रूरत मन्द लोगों के साथ साझा करें (प्रेरितों 20:35)।

चाहे मसीहियों को सपोर्ट मिलता हो या वे खुद कोई काम करके पैसा कमाते हों, लेकिन यह उनकी ज़िम्मेदारी है कि वे मण्डली में ज़रूरत मन्द लोगों के साथ में अपनी आशीषों को साझा करें(याकूब 2:14-17; 1यूहन्ना 3:16-18)। मसीही अगुवों को इस क्षेत्र में लोगों के सामने एक आदर्श स्थापित करना चाहिए। प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं कहा,"देना लेने से उत्तम है"।

20:36-38

प्रश्न 6. प्रेरित पौलुस और इफिसियों की कलीसिया आपस में किस प्रकार सम्बन्ध रखती है?

ध्यान दें।

प्रार्थना के बन्धन ने दोनों को आपस में जोड़ रखा था।

जब पौलुस जाने पर था, तो सभी लोगों ने उसके सामने घुटने टेके और पौलुस ने उनके लिए प्रार्थना की।

वे प्रेम के बन्धन से आपस में बंधे थे।

उसके पश्चात वे शोकित होकर रोने लगे, उन्होंने एक दूसरे को गले लगाया और एक दूसरे को चूमा।

दूसरे अगुवे के हाथ में अगुवाई सुपुर्त करने का यह एक बहुत अच्छा तरीका है।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दे: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम प्रेरितों के काम 20:17-38 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सम्भव सच्चाई विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा,और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करें। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1. प्रेरितों 20:17-38 के आधार पर सम्भवत: लागू की जाने वाली बातों के उदाहरण।

20:17 महीने में एक बाद, अगुवों को प्रार्थना करने तथा उनके लक्ष्यों को पूरा करने के लिए प्रशिक्षण हेतू एकत्रित करें।

20:18 अगुवा होने के नाते जो बातें आप बोलते(शिक्षा देते) हैं उन्हें करने का अभ्यास करें।

20:19 अगुवे के रूप में हमेशा नम्र बने रहें।

20:20 ऐसे विषयों पर प्रचार न करें जिसे किसी को कोई लाभ नहीं होने वाला है।

20:21 श्रोताओं या विश्वासियों को परमेश्वर के वचन के प्रति प्रतिउत्तर देने की बुलाहट देत हुए अपने प्रचार को समाप्त करें।

20:23 इस तथ्य को स्वीकार करें कि मसीही अगुवों के लिए सताव सहना, कष्ट उठाना और कारावास उनके जीवन का ही हिस्सा है।

20:24: काम खत्म करने वाले व्यक्ति बनकर उस कार्य को पूरा करें जो प्रभु यीशु मसीह ने आपको सौंपा है(यूहन्ना 4:34; 17:4; 1 कुरिन्थियों 7:24-27; कुलुस्सियों 5:17; 2 तीमुथीयुस 4:7; इब्रानियों 12:1-3)।

20:25 याद रखें कि अनुग्रह का सुसमाचार(प्रेरितों 20:24) राज्य का सुसमाचार(प्रेरितों 20:25;8:12; 28:23,31) एक ही है।

20:27 परमेश्वर की पूर्ण इच्छा को लोगों के बीच में प्रचार करने का संकल्प करें।

20: 28 अगुवा होने के नाते लोगों के लिए एक चरवाहा बनें, और एक संरक्षक बनकर अपने साथ काम करने वाले कार्यकर्ताओं की गतिविधियों पर नज़र रखें।

20:29-31.प्रभु यीशु मसीह की भेड़ों की भेड़ियों से(झूठे शिक्षकों) से रखवाली करें।

20:31. अपनी भेड़ों को बार बार झूठे शिक्षकों के सम्बन्ध में चेतावनी देते रहें।

20:32 नये अगुवे के हाथ में अगुवाई सौंपने से पहले, उसे परमेश्वर, उसके अनुग्रह और उसके वचनों के हाथों में सौंपे।

20:33-34 यदि सम्भव हो तो, अपनी व अपने सह-कर्मियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए आपूर्ति करें।

20:35. याद रखें कि देना लेने से उत्तम होता है।

20:36 जब आप प्रार्थना करें तो अपने घुटनों पर होकर प्रार्थना करें।

20:37 कभी कभार अपने भाईयों व बहनों पर सामाजिक तौर पर अपने प्रेम को प्रगट करें।

2. प्रेरितों 20:17-38 के आधार पर व्यक्ति तौर पर इस्तेमाल की जाने वाली बातों के उदाहरण।

मैं अपने उपदेशों और शिक्षाओं को इन दो सीमाओं में बीच में ही रखना चाहता हूँ। एक तरफ तो परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा को प्रचार करें, न कि केवल बाइबल के कुछ ही चुनिन्दा या पसन्दीदा अनुच्छेदों को। दूसरा, कभी भी ऐसे विषयों पर उपदेश या शिक्षा न दें जिस से किसी को कोई लाभ होने वाला नहीं है।

मैं जो भी शिक्षा देता हूँ उन्हें सबसे पहले अपने जीवन में अभ्यास करना चाहता हूँ। मैं जो कुछ अपने जीवन में करता या बोलता हूँ, या मैं जो कुछ हूँ वह विश्वासियों के लिए एक आदर्श होना चाहिएं। मैं समझ गया हूँ कि मैं हमेशा किसी न किसी को प्रभावित करता हूँ। या तो मैं कुछ काम न करके गलत आदर्श स्थापित करने के द्वारा नकारात्मक प्रभाव डालता हूँ। या ऐसे काम करने के द्वारा जिससे लोगों को यीशु मसीह की समानता प्राप्त करने में मदद मिलती है, लोगों के जीवन में सकारात्मक प्रभाव डालता हूँ। मैं एक जीवन परिवर्तित करने वाला बनना चाहता हूँ। मैं एक शिष्य र्निमाण करने वाला बनना चाहता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना	प्रतिउत्तर

आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें प्रेरितों के काम 20:17-38 में सिखाई हैं।
(जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन के समूह में होकर **प्रार्थना करते रहें**। एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रेरितों के काम 20:17-38 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: मरकुस 1:1-4:20 अध्याय के बीच में से प्रतिदिन आधा अध्याय पढ़कर परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। पसन्दीदा सच्चाई के तरीकों का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। चौथी श्रंखला "1-5 शिष्यता" का पुनरावलोकन। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।